AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

रिश्ते और टूटते परिवार

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. अंशु रानी
एम.ए. समाजशास्त्र
एम.ए. इन एजुकेशन एवं पीएच.डी.
ग्राम–खीरी, पोस्ट–खीरी, थाना–राजपुर,
जिला–बक्सर, बिहार, भारत

शोध सार

रिश्ते–नातों को टूटने और परिवारों के विघटन से मूल्यों का क्षरण हो रहा है, और ऐसा लगता है कि यह क्षरण मानवों से उनकी मानवता को ही समाप्त करके रहेगा इसलिए रिश्तों को कायम रखना जरूरी है। रिश्ते बहुत नाजुक होते हैं और एक झटके में समाप्त हो जाते हैं। ये बुड़े समय में हमारी ओर हाथ बढ़ाकर हमारे सहारे बनते रहते हैं अतः रक्ष्य हैं। संयुक्त परिवार ही भारतीय सामाजिक परिवेश में आदर्श माने जाते हैं। आज इन्हें बचाना एक बड़ी चुनौती हो गई है, किन्तु इनके विघटन को रोकना जरूरी है। परिवारों से ताल्लुक रखने वाले मुद्दों, समस्याओं और विसंगतियों को समझना आज की जरूरत है। परिवार की आर्थिक, सामाजिक और जनसांख्यिकीय प्रक्रियाओं को समझना जरूरी है ताकि परिवार की अहमियत को ठीक–ठाक समझा जा सके। परिवार की खुशहाली उसकी प्रगति का परिचायक है। संयुक्त परिवार में पीढ़ियों के मूल्य को संवारने वाले बुजुर्ग होते हैं। सर्वेक्षण बताते है कि समाज की इस महत्वपूर्ण कड़ी संयुक्त परियारों को टूटने से बचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। यदि संयुक्त परिवार को बचाए रखना है तो इसके टूटने के कारणों का निराकरण करना होगा। अधिकतर रोजी–रोजगार के चलते, पलायन, टूटने का बड़ा कारण है। किसानी अब आरामदायक कार्य हो गया है। यदि इसे लाभदायक बना दिया जाए तो पलायन रुकेगा और संयुक्त परिवार फिर से अस्तित्व में आने लगेंगे। यदि गांवों में शहरों जैसी सुविधाएं सड़क, बिजली, स्कूल, अस्पताल, पार्क, हाट आदि विकसित हो जाए तो पुनः संयुक्त परिवार बनेंगे और टूटते रिश्तों में कमी आ जाएगी और रिश्ते मजबूत होने लगेंगे।

मुख्य शब्द

रिश्ता, समाज, परिवार.

शीर्षकान्तर्गत प्रसंग एक आवश्यक समसामयिक गहन विवेचन की अपेक्षा करता है। आज जो आए दिन पारिवारिक और रिष्ते के ताने बाने में त्वरित ह्रास दृष्टिगत हो रहा है। वही इस प्रसंग पर विचार करने के लिए उत्प्रेरणा का कार्य कर रहा है। किसी भी विचारशील व्यक्ति के लिए यह चिन्ता का विषय हो सकता है कि सभ्यता के आदि काल में जो क्रमशः परिवार का सम्यक् विकास हुआ था और एक समय परिवार अपने असल मायनों में अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल था, जहाँ उसके सदस्यों को शान्ति और सुकून प्रतीत होता था वह आज कंटक भरा क्यों प्रतीत हो रहा है। इस पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए हम इसके हर

पहलू पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करना चाहेंगे।

परिवार और रिश्ता क्या है?

शाब्दिक रूप से परिवार को अंग्रेजी में Family शब्द का रूपांतरण या अनुवाद माना गया है जो लैटिन शब्द Famuls से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है 'सेवक'। सेवा परिवार का एक महत्वपूर्ण गुण या अवयव है। इसी लिए परिवार का तात्पर्य किसी ऐसे संगठन से है जिसके सदस्यों में एक दूसरे के लिए सेवा भाव की प्रधानता होती है। सेवा परिवार का बहुत ही आवष्यक और अनिवार्य गुण है। ऐसा नहीं है कि परिवार मात्र अंग्रेजी के Family का अनुवाद ही है।

भारतीय भाषाओं में कुटुम्ब, खानदान और कुल तथा परिवार शब्द पहले से ही प्रचलन में थे। यहाँ तक कि आदिभाषा या देवमाषा संस्कृत में इसकी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है। हम तो जानते ही हैं कि दुनिया की सारी भाषाओं का उत्स संस्कृत ही है। यथा परिवार परिव्रियते यानेन परि+वृ+घञ्। परिवार में इसके सदस्य परिवार सम्यक् रूपेण परिवृत्त होते हैं। परिवृत्त के कई अर्थ होते हैं। घिरे हुए सुरक्षित सेवित। थ्ंउनसे से अधिक सार्थक हमारा संस्कृत शब्द परिवार है। इसमें सेवा–भाव सुरक्षा और पालन अर्थ अधिक महत्त्वपूर्ण है। बाद के पाश्चात्य और पौर्वाचार्यों ने इन्हीं गुणों के आश्रय से परिवार का विषद स्वरूप लाने का प्रयास किया है या इसे परिभाषित किया है। संस्था के रूप में किन्हीं समाजों में परिवार का रूप लगभग समान ही है, पर आकार और संगठन की दृष्टि से कुछ भिन्नता है इसलिए विभिन्न देशीय विद्वानों के विचारों में भी भिन्नता दिखाई देती है।

जैसे–बगैस और लॉक के अनुसार

6 परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रक्त संबंध, यौन संबंध अथवा गोद लेने के संबंधों द्वारा संगठित है, एक छोटी सी गृहस्थी का निर्माण करते हैं और पति–पत्नी, माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई–बहन के रूप में एक–दूसरे से अन्त क्रियाएँ करते तथा एक सामान्य संस्कृति का निर्माण और उसका देख–रेख करते हैं।

मैकाइवर और पेज ने भी इसी से मिलते–जुलते कहा है, परिवार ऐसे समूह है जो यौन सम्बन्धों पर आश्रित है तथा इतना छोटा और शक्तिशाली है कि सन्तान के जन्म और पालन–पोषण का व्यवस्था करने की क्षमता रखते हैं।

पी. एच. प्रभु का कथन है कि कुछ समुदाय में यौन सम्बन्ध बाहरी क्रियाएँ हैं, फिर भी सन्तानों से परिवार बनता है।

इसी तरह लुण्डबर्ग, आगबर्न और निमकौफ, किंग्सले–डेविस आदि विद्वान सार रूप में मानते हैं कि परिवार पति–पत्नी बच्चों तथा निकट संबंधियों का अपेक्षाकृत एक स्थायी संगठन है जिसे विवाह, सन्तानोंत्पत्ति और वंष नामक आधार पर व्यवस्थित रखा जाता है।

परिवार की परिभाषाजनित आठ विशेषताएँ उल्लेखनीय मानी गई हैं:

1. सर्वव्यापकता।
2. भावनात्मक आधार।
3. रचनात्मक प्रभाव।
4. छोटा आकार।
5. समाजिक ढांचे में केन्द्रीय स्थिति।
6. सदस्यों का या सीमित उत्तरदायित्व।
7. सामाजिक नियम का आधार।
8. परिवार का स्थायी या अस्थायी स्वभाव।

परिवार के प्रमुख प्रकार परिवारों के प्रकार का आधार सदस्यों की संख्या, सत्ता तथा वंशनाम, वैवाहिक आधार, सामाजिक परिस्थितियाँ होती हैं।

इस दृष्टि से:

(अ) एकाकी परिवार

(ब) विवाह संबंधित परिवार

(स) संयुक्त परिवार

01. **एकाकी परिवार:** यह सबसे छोटा परिवार होता है, हम दो और हमारे दो या तीन बच्चे। इससे छोटा परिवार क्या हो सकता है। आजकल अधिकतर विवाहित जोड़ें इसी प्रकार के परिवार को अधिक पसंद करते हैं। खासकर विवाहित स्त्रियाँ। इनका दायित्व कम होता है और आवश्यकताएँ सिर्फ अपने लिए होती है।

02. **विवाह संबंधित परिवार:** विवाह सम्बन्धी परिवार एकाकी परिवार की अपेक्षा अधिक बड़े होते हैं, इसके सदस्य पति पक्ष और पत्नी पक्ष भी होते हैं। इसको मिश्रित परिवार भी कहा जाता है। ऐसे परिवारों के बहुत कम उदाहरण मिलते हैं।

03. **संयुक्त परिवार:** संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक प्रमुख सांस्कृतिक संस्था है। लगभग इन्हीं से मिलते–जुलते परिवारों को संसार के दूसरों भागों में विस्तृत परिवार (Extended family) कहा जाता है। इसमें माता–पिता, चाचा–चाची, ताई–ताऊ, दादा–दादी, माई–भतीजे, बेटा–बेटी, नाती–पोते आदि सम्बन्धों के लोग एक–साथ मिल–जुलकर रहते हैं। पुराने युग में संयुक्त परिवार सामाजिक रूप से अधिक बलवान और दबदबे वाला माना जाता है।

परिवार और रिश्ता

रिश्ते प्रमुख दो तरह के होते हैं:

(1) पारिवारिक रिश्ता और (2) सामाजिक रिश्ता।

1. **पारिवारिक रिश्ता भी दो तरह के होते हैं:** एक पिता की तरफ से दूसरा माता की तरफ है। पिता की तरफ से दादा–दादी, पिता, चाचा–चाची, ताऊ–ताई, भाई–बहन, भतीजा–भतीजी, भौजाई, फुआ–फूफा आदि। माता की तरफ से नाना–नानी, मामा–मामी, मामा– मामी के पुत्र–पुत्रियाँ, मौसा–मौसी उनके पुत्र–पुत्रियाँ आदि। एक बड़े परिवार में ये सारे रिश्ते भी बड़े आदर से निभाए जाते हैं।

समाजिक रिश्ता या भाईचारा

जिस समाज में हम रहते हैं वहाँ अवस्था और निकटता तथा सद्व्यवहार के आधार पर अनेक रिश्ते बन जाते हैं, अपने से बड़ी अवस्था वाले लोगों को हम दादा–दादी, चाचा–चाची आदि कहकर पुकारते हैं। समवयस्कों को भाई और छोटों को बेटा–बेटी आदि रिश्ते के नाम दिए जाते हैं। मित्रता का संबंध कभी–कभी सगे–संबंध से भी अधिक मजबूत सिद्ध होता है। यह सामाजिक संबंध मनुष्य को बड़ा बल प्रदान करता है और आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग भी करता है। जन्म, मरण और अन्य संस्कारों में सहभागी होता है।

रिश्ते और टूटता परिवार

आज की तेजी से बदलती हुआ दुनिया की यह एक ज्वलन्त समस्या मानी जा सकती है, इसका दुष्प्रभाव हमारी जातीय एकता और राष्ट्रीय एकता एकत्व में भी बाधा है। इस टूटन या बिखराव के उत्तरदायी कारण बहुत से हैं। **जैसे:** संवादहीनता, संचार की कमी, आधुनिक जीवन शैली, आर्थिक दबाव, उत्तरदायित्वों से भागना, व्यक्तिगत स्वायत्तता की माँग आदि मुख्य कारण है।

रिश्तों और परिवारों के टूटने के मुख्य कारण:

(क) **संचार की कमी:** पारिवारिक सदस्यों के बीच संवादहीनता, गलत चाह भी और तनाव बढ़ना भी एक कारण है जिसके कारण रिश्तों में दरार आती है।

(ख) **बदलती हुई जीवन शैली:** शहरीकरण, वैश्वीकरण, बाजारवाद, और आधुनिक जीवन की भाग–दौड़ न

परिवारों को शहरीकरण, वैश्वीकरण, बाजारवाद, और आधुनिक जीवन की भाग–दौड न परिवारों को छोटा और एकल बना दिया, जिससे रिश्तों में दूरियाँ आ गई हैं।

(ग) **आर्थिक दबाव और बढ़ती अपेक्षाएँः** साथ– साथ बढ़ती हुई भौतिक इच्छाएँ भी परिवार में तनाव का कारण बनती है।

(घ) **व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती भावनाः** आज की पीढ़ी अधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता चाहती है, खास कर ब्याह कर लायी गई स्त्रियाँ पति के घर से ताल–मेल नहीं बैठा पातीं जो पूरे पारिवारिक ढांचे के लिए चुनौती बना हुआ है।

(ङ) **पारिवारिक मूल्यों का क्षरणः** परिवार में जो पारंपरिक आदर्श और भौतिक मूल्य स्थापित थे। कालान्तर में उनमें क्षरण होने से रिश्तों में कमी आ रही है। बड़े–बूढ़ों के प्रति आदर और श्रद्धा के भाव घटते– घटते उपेक्षा की भावना तक स्खलित हो चुके हैं, किन्तु लोगों में ये भाव बिल्कुल विलुप्त नहीं हुए हैं।

(च) **आधुनिक शिक्षा में भौतिक शिक्षा का अभावः** शिक्षा की व्यापक प्रचार और प्रसार हो गया है परन्तु धार्मिक और भौतिक पाठों का समावेश नहीं होने से समाज में और परिवार में सम्बन्धों में कमी आ गई।

एक छत के नीचे रहने भर से परिवार का अर्थ पूरा नहीं होता, एक दूसरे की भावनाओं को समझने के साथ ही एक दूसरे को समझाने की भी आवश्यकता होती है। सम्मान देना और सुख–दुःख में साझी बनना पड़ता है। गत कुछ वर्षों में विघटन की भावना तेजी से बढ़ी है और हमने अपने परिवार को समय एवं महत्त्व देना कम कर दिया है। परिणामस्वरूप बुजुर्गों का तिरस्कार बढ़ा एवं बच्चों की अवहेलना। संयुक्त परिवार टूटने लगे रिष्तों में दरारें आ गई। व्यक्ति एकल परिवार के आकर्षणों में बन्धने लगा। इन्सान स्वार्थी हो गया संयुक्त परिवार में लोग मिल–जुलकर एक छत के नीचे रहते, खाते–पीते, सुख–दुःख में एक–साथ सब खड़े रहते। थोड़े–बहुत झगड़े होते थे, परन्तु बेइन्तहा प्यार भी बरसता था। एक बड़े बुजुर्ग के चारों जब घर के सारे बच्चों को एक–एक कौर सभी को खिलाते है तो बच्चे बाँट कर खाना, एक दूसरे का ख्याल रखना स्वतः सीख जाते थे। दादी नानी की कहानियों में नैतिकता का पुट भी होता था। बाबा, दादा के संस्कार मिलता था। घर के बड़ों सम्मान, आज्ञा सर्वोपरि होती की। वे जो कहते सबके लिए स्वीकार होता। वहाँ तर्क, वितर्क और बहस की गुंजायश नहीं थी, इसीलिए परिवार, स्नेह और प्यार एक मजबूत रहता था, जो देष और राष्ट्र की एकता और गरिमा की रक्षा में सहायक होता था।

मुसीबत बन रहे एकल परिवार

एकल परिवार स्वयं एक विडम्बना है। यहाँ बच्चों की तो छोड़िए बड़ों पर अंकुश लगाने वाला कोई नहीं होता। परिवार में यदि अनुशासन नहीं तो परिवार बिखरते देर नहीं लगती। बढ़ते पारिवारिक झगड़े, तलाक, बच्चो का उद्दण्डता पूर्ण व्यवहार इसके उदाहरण है। कामकाजी माता और नौकरी पेशा पिता बच्चों की समुचित देखभाल नहीं कर पाते। बेतल का दूध और पालना घर में खिलखिली बिखरने वाले बचपन, माँ बाप की ममता से वंचित होना भयंकर भावी पारिवारिक त्रासदी की ओर इशारा कर रहे हैं। भारतीय जीवन शैली विकृत हो रही है। एकाकी बच्चा बुरी संगत में पड़कर जुआ, शराब, सिगरेट पीने लगता है और इसकी पूर्ति के अभाव में तस्करी, चोरी, डकैती से अपराध में संलिप्त हो जाता हैं।

संबंधों में जुड़ाव, विश्वास, आपसी समझ बनाए रखने के लिए कुछ त्याग करने पड़ते हैं। सोशल मीडिया इन दिनों जीवन का हिस्सा बन गया है, बच्चे फेसबुक, व्हाट्सएप चौटिंग से समय बर्बाद कर रहे हैं। ऑनलाइन गेमिंग से आत्महत्याएँ घटित हो रही है। माँ, बाप, बच्चे सभी मोबाइल में लगे रहते हैं, एक दूसरे से बातें तक नहीं करते। आजकल परिवार के लोग खुद की श्रेष्ठता पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

शादी समारोह के लिए हर कोई स्वयं में संवरने–सजने पर जुट जाता है। परिवार के अन्य सदस्यों की ओर ध्यान ही नहीं जाता।

दरकते रिश्तों और टूटते परिवारों को समेटने की जरूरत

एक समय था जब लोग समूह और परिवार में रहना पसंद करते थे, जिसका जितना बड़ा परिवार होता वो उतना ही सम्पन्न और सौभाग्यशाली माना जाता। जिस परिवार में मेल–मिलाप रहता उसकी प्रतिष्ठा पूरे क्षेत्र में होती थी। परिवार का बुजुर्ग, मोहल्ले का बुजुर्गी माना जाता था। किसी घर का दामाद पूरे गाँव का दामाद तथा बेटी पूरे गाँव की बेटी होती थी। बदलते दौर और समय ने सारी पुरानी व्यवस्था को बदल कर रख दिया है। पहले व्यक्ति परिवार के लिए जीता था, आज व्यक्ति अपने बीबी–बच्चों के लिए जीता है। सामूहिक परिवार में कब बच्चे बड़े हो जाते थे और दुनियादारी की समझ कर लेते थे बच्चों के माँ–बाप को पता ही नहीं लगता था। जब से व्यक्ति ने सोचना शुरू कर दिया कि कैसे मेरा बेटा सबसे आगे निकलें और कैसे मैं अपनी कमाई का अपने लिए अधिक से अधिक उपयोग कर सकूँ तब से रिश्ते और परिवार अपने मान दंड से गिरते जा रहे हैं।

परिवार और रिश्तों का टूटने से कैसे बचाएं

परिवार और रिश्तों को बचाने के लिए नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना बहुत आवश्यक है। नैतिक शिक्षाप्रद कहानियों को पाठ्यक्रम में स्थान देना, बच्चों में अच्छी आदतों डालना, परार्थ की भावना का विकास करना और समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाना बहुत महत्त्वपूर्ण उपाय है। इसे बिन्दुवार इस प्रकार कह सकते हैंः

(क) **अपनी भावनाओं को स्वीकार करनाः** क्रोध, नाराजगी, दुःख और अपराध जैसी भावनाओं को स्वयं समझो और इसके उत्पन्न होने के कारणों और समाधानों को जानो।

(ख) **प्रभावी संचारः** परिवार के प्रत्येक सदस्य के संग खुले हृदय से बातचीत से कई समस्याओं के समाधान में मदद मिल जाती है। संवादहीनता की स्थिति कई फहमियां पाले रहती है। मिलकर बात–चीत से मन मैल धूल जाती है। कभी–कभी अकारण ही किसी के प्रति दूसरों के कहने सुनने से गलत धारणा मन में बैठ जाती है, बात–चीत से सहज समाधान हो जाता है।

(ग) **एक–दूसरे का सहारा लेंः** अपने दोस्तों, मित्रों, परिवार का अन्य सदस्यों था किसी पेशेवर से उचित वार्तालाप करें और सहायता का अनुरोध करें।

(घ) **सीमाएँ तय करेंः** सम्बन्धों की एक मर्यादा होती है उसका ध्यान बहुत जरूरी होता है। सम्बन्धों में स्वस्थ सीमाएँ बनाना भविष्य के कलेश और कलह का निराकरण करने में सक्षम होता है।

(ङ) **अपना ख्याल रखेंः** शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें। प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास करें। स्वस्थ मन के लिए सात्विक आहार महत्त्वपूर्ण होता है।

(च) क्षमा करना सीखेंः अतीत की दुखद बातों को भुलना चाहिए, क्षमाशीलता एक दैवीय गुण है। क्षमा करने से कई समस्याएँ खत्म हो जाती है और स्वयं को भी व्यक्ति प्रफुल्लित महसूस करता है।

परिवार को जोड़ने का प्रयास

(i) **समर्पित प्रयासः** टूटते परिवार को ठीक रखने के लिए कड़े परिश्रम और समर्पण की आवश्यकता होती है।

(ii) **भावनात्मक सहाराः** सदस्यों को एक–दूसरे का समर्थन करना चाहिए। विरोधी भावनाओं को पास नहीं आने देना चाहिए।

(iii) **पेशेवर या जानकारों की मदद लेंः** यदि कोई समस्या मिल बैठकर नहीं सुलझती हो तो ऐसी अवस्था में किसी पेशेवर या सलाहकार की सहायता से समस्या को सुलझाया जा सकता है।

(iv) **साथ में समय बिताएँः** परिवार के साथ अधिकाधिक समय व्यतीत करें, खास कर योजना एक साथ करें।

(v) **आपसी सम्मानः** परिवार के हर सदस्य की भावनाओं, विचारों और व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ख्याल रखें, उनका सम्मान करें।

(vi) **परम्परा बनाएँ**: परिवारिक परम्पराओं को मिटने न दें, त्योहारों को मिल–जुलकर मनाएँ, शादी–ब्याह में दूरस्थ सदस्य मूल परिवार में आएं और आर्थिक सहायता से कार्यक्रम को भव्यता दें।

(vii) **प्यार और प्रशंसा करें**: परिवार के सभी सदस्य यथायोग्य सभी से प्यार और लगाव महसूस करें, बड़ों को श्रद्धा और छोटों को स्नेह दें।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था की मूल आत्मा संयुक्त परिवार व्यवस्था वर्तमान में अपवाद स्वरूप ही बची है। इस संयुक्त परिवार व्यवस्था को टूटने से बचाया जा सकता है। बचाना जरूरी है नहीं तो एक समय ऐसा आएगा कि पति–पत्नी भी एक साथ नहीं रहेंगे। यौन इच्छाओं की पूर्ति के बाद एक साथ रहना भी मुश्किल होगा। पशुवत व्यवहार सभ्य समाज के लिए अभिशाप होगा जैसे पशु एक अवस्था के बाद अपने पुत्र और पुत्रियों में विमंद नहीं करते और उसी पुत्र या पुत्री से यौन सम्बन्ध बनाते रहते हैं। केवल निज की उदरपूर्ति के अतिरिक्त उनकी और कोई आवश्यकता नहीं होती, वैसे ही पारिवारिक संरचना ध्वस्त होने के बाद मानव समाज हो जाएगा, जहाँ ममता, प्यार, सहयोग और सामंजस्य की भावना नहीं होगी। कभी हम जहाँ वसुधैव कुटुम्बकम् और world citizenship की बात करते थे, वहीं हम अब हम दो और हमारे एक की बात करने लगे हैं। अब दो बच्चे भी भार प्रतीत होते, बस एक बच्चा चाहे लड़का चाहे लड़की काफी है।

इन एकल भावनाओं से हमें उबरना होगा। संयुक्त परिवार कायम रहे इसके लिए मानवीय मूल्यों की बड़ी आवष्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति में उदारता और जैसे सहिष्णुता, गुण होने चाहिए। हमारा मन उदार होना चाहिए। हम एक दूसरे की बातों को नजरअंदाज नहीं कर सकता। हमारी हर कोशिश यह होनी चाहिए कि हम किसी भी सूरत में परिवार को बिखरने न दें।

यदि परिवार का विघटन होना ही अंतिम परिणाम है तो प्यार से सही समझौते से हो और विघटन के बाद भी परिवार सौहार्दपूर्ण बचा रहना चाहिए। कभी–कभी घरों का टूटना भी आवश्यक हो जाता है ऐसी परिस्थिति तब उत्पन्न होती हैं जब अपनापन बहुत बढ़ जाता है और कुछ लोग निष्क्रिय रहकर पारिवारिक सम्पति का उपभोग और दुरूपयोग करने लग जाते हैं। परिवार के अलग होने से जिम्मेवारी बढ़ जाती है। सक्रियता बढ़ जाती है और फिजूलखर्ची कम हो जाती है। परिवार विकास करने लग जाता है। विघटन के बाद भी एक कुल के लोगों में प्यार और सम्मान बना रहे तो वह परिवार संयुक्त परिवार की तरह ही माना जाता है।

संदर्भ सूची

1. आहूजा, राम (2002) *भारतीय समाज,* रावत प्रकाशन, सत्यम अपार्टमेंट, जयपुर।
2. महाजन, धर्मवीर; महाजन, कमलेश (2006) *भारतीय समाज : मुद्दे एवं समस्याएँ,* विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
3. अग्रवाल, गोपाल कृष्ण (2005) *समाजशास्त्र के सिद्धान्त,* साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि, उत्तर प्रदेश।
4. पाण्डेय, गणेश (2007) *भारतीय सामाजिक समस्याएँ,* राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
5. गुप्ता, एल.; शर्मा, डी.डी. (2005) *सामाजिक विघटन,* अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

––==00==––